चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	15-10-22	4	1-4

गेहूं का उत्पादन कम हो रहा तो धान में आ रहा बौनापन

जागरण संवाददाता, हिसार: तापमान का फसलों पर असर पड़ रहा है। हालात यह हैं कि गेहूं में साल दर साल उत्पादन गिर रहा है। इसके पीछे विशेषज्ञ मार्च में अत्यधिक गर्मी बता रहे हैं। वहीं धान बौनेपन की समस्या से जूझ रहा है। धान का पौधा लगातार छोटा होता जा रहा है। इसको लेकर अब कृषि विशेषज्ञों व अधिकारियों ने मंथन शुरू कर दिया है। शुक्रवार को इसी विषय पर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित हुई। जिसका शुभारंभ कुलपति प्रो बीआर कांबोज ने किया। कार्यशाला में विवि के विज्ञानियों व प्रदेश के सभी जिलों से राज्य कृषि और किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों ने भाग लिया।

कुलपति ने बताया कि कृषि क्षेत्र के विकास के लिए नई सोच और सहयोग से आगे बढ़ना जरूरी है।

पुस्तिका का विमोचन करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज व अन्य । • प्रवक्ता

नई किस्मों पर विचार करें विज्ञानी : डा. हरदीप

कृषि महानिदेशक डा. हरदीप सिंह ने बताया कि पिछले कुछ वर्षों से मार्च के महीने में औसत तापमान में हो रही वृद्धि से गेहू की फसल पर विपरीत असर पड़ने से उत्पादकता कम हो रही है। गेहू की कुछ ऐसी किस्में विकसित की जाए जो तापमान में हो रही वृद्धि के प्रति सहनशील हो। उन्होंने खेती में आ रही समस्याओं जैसे धान में बौनेपन की समस्या, मृदा के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए उपाय व खेती में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग पर भी इस कार्यशाला में विचार करने के लिए कहा।

जैविक कार्बन आज की मुख्य चुनौतियां : डा. सुमिता मिश्रा

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डा. सुमिता मिश्रा ने बताया कि वर्तमान समय में जलवायु में हो रहे परिवर्तन व मृदा में घटते हुए जैविक कार्बन का स्तर मुख्य चुनौतियां है। विज्ञानियों से आह्वान किया कि हमें बदलती जलवायु के अनुकूल फसलों की नई किस्में विकसित करनी होंगी व मृदा स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए टिकाऊ खेती की तरफ बढ़ना होगा।मृदा परीक्षण की रिपोर्ट के आधार पर संतुलित उर्वरक प्रबंधन व नैनो यूरिया जैसे नए उर्वरकों को अपनाकर मृदा स्वास्थ्य को सुधारने के साथ-साथ अधिक पैदावार लेने संबंधी तकनीकी जानकारी अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचानी होगी।

संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन के साथ-साथ तत्वों के पौधे द्वारा ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाने की तकनीक अपनाना, ड्रेनेज सिस्टम अपनाने व मृदा के लवणता प्रबंधन पर भी ध्यान देना होगा।

लेजर लेवलिंग करवाते समय खेतों में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले ढलान जोकि अधिक वर्षा के पानी को निकालने में सहायक होते हैं उनका भी ध्यान रखने की जरूरत है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	15.10.22	4	3-7

कार्यशाला • : एचएयू में दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला के शुभारंभ पर बतौर मुख्यातिथि वीसी बोले

फसल अवशेष प्रबंधन व प्राकृतिक खेती समय की मांग

भास्कर न्यूज | हिसार

कृषि क्षेत्र के विकास के लिए नई सोच और सहयोग से आगे बढ़ना जरूरी है। संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन के साथ-साथ तत्वों के पौधे द्वारा ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाने की तकनीक अपनाना, ड्रेनेज सिस्टम अपनाने व मृदा के लवणता प्रबंधन पर ध्यान देना होगा।

यह विचार एचएयू के वीसी प्रो. बीआर काम्बोज ने दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का शुभारंभ अवसर पर बतौर मुख्यातिथि कहे। उन्होंने कहा लेजर लेवलिंग करवाते समय खेतों में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले ढलान जो अधिक वर्षा के पानी को निकालने में सहायक होते हैं उनका ध्यान रखने की जरूरत। अधिक वर्षा के समय पानी को संचित करने व बाद में खेती के लिए उपयोग करना समय की मांग है। उन्होंने जलवायु परिवर्तन, फसल अवशेषों का प्रबंधन, प्राकृतिक खेती व मृदा स्वास्थ्य पर ध्यान देने के लिए युवाओं को कृषि संबंधित प्रशिक्षण देने पर बल दिया।

वीसी ने कहा कि वैज्ञानिक व कृषि अधिकारी किसानों को परम्परागत खेती की बजाय फसल विविधिकरण के साथ-साथ आधुनिक खेती के तौर तरीकों, मृदा जांच व नवीनतम तकनीकों की जानकारी देते हुए जागरूक करें।

कार्यक्रम में हरियाणा सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा बतौर विशिष्ट अतिथि ऑनलाइन माध्यम से वर्कशॉप में जुड़ी। इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों तथा प्रदेश के सभी जिलों से राज्य कृषि और किसान कल्याण विभाग के कृषि अधिकारियों ने भाग लिया। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया।

एचएयू में कार्यशाला के दौरान पुस्तिका का विमोचन करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अन्य।

जलवायु परिवर्तन व मृदा में घटते जैविक कार्बन आज की मुख्य चुनौतियां : डॉ. सुमिता मिश्रा

हरियाणा सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा, आईएएस ने वर्कशॉप के दौरान कहा कि वर्तमान समय में जलवायु में हो रहे परिवर्तन व मृदा में घटते हुए जैविक कार्बन का स्तर मुख्य चुनौतियां हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि हमें बदलती जलवायु के अनुकूल फसलों की नई किस्में विकसित करनी होंगी व मृदा स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए टिकाऊ खेती की तरफ बढ़ना होगा। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती को इस रबी सीजन से किसानों के साथ मिलकर शुरू करने की पहल की जा रही है। मृदा परीक्षण की रिपोर्ट के आधार पर संतुलित उर्वरक प्रबंधन व नैनो यूरिया जैसे नए उर्वरकों को अपनाकर मृदा स्वास्थ्य को सुधारने के साथ-साथ अधिक पैदावार लेने संबंधी तकनीकी जानकारी अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचानी होगी।

धान में बोनेपन की समस्या पर चर्चा हो : डॉ. हरदीप

कृषि महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने बताया कि पिछले कुछ वर्षों से मार्च के महीने में औसत तापमान में हो रही वृद्धि से गेहूं की फसल पर विपरीत असर पड़ने से उत्पादकता कम हो रही है। गेहूं की कुछ ऐसी किस्में विकसित की जाए जो तापमान में हो रही वृद्धि के प्रति सहनशील हो। उन्होंने धान में बोनेपन की समस्या, मृदा के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए उपाय व खेती में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग पर इस कार्यशाला में विचार करने के लिए कहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	15.10.22	10	4-8

एचएयू वैज्ञानिकों एवं प्रदेश के कृषि अधिकारियों की वर्कशॉप

संतुलित पोषक तत्व व प्राकृतिक खेती समय की मांग : प्रो. काम्बोज

■ फसलों में नई समग्र सिफारिशों के लिए दो दिन करेंगे मंथन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

कृषि क्षेत्र के विकास के लिए नई सोच और सहयोग से आगे बढ़ना जरूरी है। संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन के साथ-साथ तत्वों के पौधे द्वारा ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाने की तकनीक अपनाना, ड्रेनेज सिस्टम अपनाने व मृदा के लवणता प्रबंधन पर भी ध्यान देना होगा। यह बात विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का शुभारंभ में बतौर मुख्यातिथि कहे। उन्होंने कहा लेजर लेवलिंग करवाते समय खेतों में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले ढलान जोकि अधिक वर्षा के पानी को निकालने में सहायक होते हैं उनका भी ध्यान रखने की जरूरत। अधिक वर्षा के समय पानी को संचित करने व बाद में खेती के लिए उपयोग करना समय की मांग है। उन्होंने किसानों और वैज्ञानिकों को अधिक उत्पादन के लिए बधाई दी लेकिन इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन, फसल अवशेषों का प्रबंधन, प्राकृतिक खेती व मृदा स्वास्थ्य पर ध्यान देने के लिए युवाओं को कृषि संबंधित प्रशिक्षण देने पर बल दिया। कार्यक्रम में हरियाणा सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा बतौर विशिष्ट अतिथि ऑनलाइन माध्यम से वर्कशॉप में जुड़ी। इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों तथा प्रदेश के सभी जिलों से राज्य कृषि और किसान कल्याण विभाग के कृषि अधिकारियों ने भाग लिया।

हिसार। पुस्तिका का विमोचन करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अन्य।

योजनाओं के बारे में बताया

कृषि विभाग के अतिरिक्त निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आर.एस. सोलंकी ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा द्वारा किसानों के हित में चलाई जा रही योजनाओं व उपलब्धियों के बारे में बताया। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने वर्कशॉप की विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर कृषि महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह, अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा, नोडल ऑफिसर डॉ. हवा सिंह सहारण आदि मौजूद थे।

जलवायु परिवर्तन मुख्य चुनौतियां : डॉ. मिश्रा

हरियाणा सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा ने वर्कशॉप के दौरान कहा कि वर्तमान समय में जलवायु में हो रहे परिवर्तन व मृदा में घटते हुए जैविक कार्बन का स्तर मुख्य चुनौतियां है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि हमें बदलती जलवायु के अनुकूल फसलों की नई किस्में विकसित करनी होंगी व मृदा स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए टिकाऊ खेती की तरफ बढ़ना होगा। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित फसलोत्पादन संबंधी सिफारिशें बहुत ही कारगर हैं, उनको अपनाने के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रेरित करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	15.10.22	3	5

फसल अवशेष प्रबंधन व प्राकृतिक खेती समय की मांग

प्रदेश के कृषि अधिकारियों की वर्कशॉप, फसलों में नई समग्र सिफारिशों के लिए दो दिन करेंगे मंथन

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। कृषि क्षेत्र के विकास के लिए नई सोच और सहयोग से आगे बढ़ना जरूरी है। संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन के साथ-साथ तत्वों के पौधे द्वारा ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाने की तकनीक अपनाना, ड्रेनेज सिस्टम अपनाने व मृदा के लवणता प्रबंधन पर भी ध्यान देना होगा।

ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का शुभारंभ में बतौर मुख्यातिथि कहे। उन्होंने कहा लेजर लेवलिंग करवाते समय खेतों में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले ढलान जोकि अधिक वर्षा के पानी को निकालने में सहायक होते हैं उनका भी ध्यान रखने की जरूरत। अधिक वर्षा के समय पानी को संचित करने व बाद में खेती के लिए उपयोग करना समय की मांग है। उन्होंने किसानों और वैज्ञानिकों को अधिक उत्पादन के लिए बधाई दी, लेकिन इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन, फसल अवशेषों का प्रबंधन, प्राकृतिक खेती व मृदा स्वास्थ्य पर ध्यान देने के लिए युवाओं को कृषि संबंधित प्रशिक्षण देने पर बल दिया।

एचएयू में पुस्तिका का विमोचन करते कुलपति प्रो.बीआर कांबोज व अन्य। संवाद

घटते हुए जैविक कार्बन आज की मुख्य चुनौतियां : कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा बतौर विशिष्ट अतिथि ऑनलाइन माध्यम से वर्कशॉप में जुड़ी। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में जलवायु में हो रहे परिवर्तन व मृदा में घटते हुए जैविक कार्बन का स्तर मुख्य चुनौतियां है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि हमें बदलती जलवायु के अनुकूल फसलों की नई किस्में विकसित करनी होंगी व मृदा स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए टिकाऊ खेती की तरफ बढना होगा। इसके अलावा उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती को इस रबी सीजन से किसानों के साथ मिलकर शुरू करने की पहल की जा रही है। उन्होंने कहा कि मृदा परीक्षण की रिपोर्ट के आधार पर संतुलित उर्वरक प्रबंधन व नैनो यूरिया जैसे नए उर्वरकों को अपनाकर मृदा स्वास्थ्य को सुधारने के साथ-साथ अधिक पैदावार लेने संबंधी तकनीकी जानकारी अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचानी होगी। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित फसलोत्पादन संबंधी सिफारिशें बहुत ही कारगर हैं, उनको अपनाने के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रेरित करें।

कृषि महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने वर्तमान समय में कृषि विभाग के समक्ष आ रही चुनौतियों के बारे में चर्चा करते हुए बताया कि पिछले कुछ वर्षों से मार्च के महीने में औसत तापमान में हो रही वृद्धि से गेहूं की फसल पर विपरित असर पड़ने से उत्पादकता कम हो रही है। कृषि विभाग के अतिरिक्त निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आरएस सोलंकी ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा द्वारा किसानों के हित में चलाई जा रही योजनाओं व उपलब्धियों के बारे में बताया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	15.10.22	8	1-2

कृषि वैज्ञानिकों का 2 दिवसीय मंथन शिविर

हिसार में शुक्रवार को कृषि वैज्ञानिकों व अधिकारियों की मंथन कार्यशाला के दौरान पुस्तिका का विमोचन करते प्रो बीआर काम्बोज व अन्य। - निस

हिसार (निस) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में फसलों की नई समग्र सिफारिशों के लिए कृषि वैज्ञानिकों व अधिकारियों के 2 दिवसीय मंथन शिविर को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो बीआर काम्बोज ने कहा कि कृषि क्षेत्र के विकास के लिए नई सोच और सहयोग से आगे बढ़ना जरूरी। संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन के साथ-साथ तत्वों के पौधे द्वारा ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाने की तकनीक अपनाना, ड्रेनेज सिस्टम अपनाने व मृदा के लवणता प्रबंधन पर भी ध्यान देना होगा। उन्होंने कहा लेजर लेवलिंग करवाते समय खेतों में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले ढलान, जोकि अधिक वर्षा के पानी को निकालने में सहायक होते हैं, का भी ध्यान रखने की जरूरत। अधिक वर्षा के समय पानी को संचित करने व बाद में खेती के लिए उपयोग करना समय की मांग है। प्रो काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिक व कृषि अधिकारी किसानों को परम्परागत खेती की बजाय फसल विविधिकरण के साथ-साथ आधुनिक खेती के तौर तरीकों, मृदा जांच व नवीनतम तकनीकों की जानकारी देते हुए जागरूक करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	15-10-22	4	5-6

संतुलित पोषक तत्व, फसल अवशेष प्रबंधन व प्राकृतिक खेती समय की मांग : प्रो. काम्बोज

हिसार, 14 अक्तूबर (राठी): कृषि क्षेत्र के विकास के लिए नई सोच और सहयोग से आगे बढ़ना जरूरी। संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन के साथ-साथ तत्वों के पौधे द्वारा ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाने की तकनीक अपनाना, ड्रेनेज सिस्टम अपनाने व मृदा के लवणता प्रबंधन पर भी ध्यान देना होगा।

ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का शुभारंभ में बतौर मुख्यातिथि कहे। उन्होंने कहा लेजर लैवलिंग करवाते समय खेतों में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले ढलान जोकि अधिक वर्षा के पानी को निकालने में सहायक होते हैं उनका भी ध्यान रखने की जरूरत है। अधिक वर्षा के समय पानी को संचित करने व बाद में खेती के लिए उपयोग करना समय की मांग है।

» कृषि अधिकारी फसलों में नई समग्र सिफारिशों के लिए 2 दिन करेंगे मंथन

कार्यक्रम में हरियाणा सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा बतौर विशिष्ट अतिथि ऑनलाइन माध्यम से वर्कशॉप में जुड़ी। अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा ने कहा कि वर्तमान समय में जलवायु में हो रहे परिवर्तन व मृदा में घटते हुए जैविक कार्बन का स्तर मुख्य चुनौतियां है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि हमें बदलती जलवायु के अनुकूल फसलों की नई किस्में विकसित करनी होंगी व मृदा स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए टिकाऊ खेती की तरफ बढ़ना होगा।

कृषि महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने वर्तमान समय में कृषि विभाग के समक्ष आ रही चुनौतियों के बारे में चर्चा करते हुए बताया कि पिछले कुछ वर्षों से मार्च के महीने में औसत तापमान में हो रही वृद्धि से गेहूं की फसल पर विपरीत असर पड़ने से उत्पादकता कम हो रही है। उन्होंने बताया कि गेहूं की कुछ ऐसी किस्में विकसित की जाए जो तापमान में हो रही वृद्धि के प्रति सहनशील हो। इसके अलावा उन्होंने खेती में आ रही समस्याओं जैसे धान में बौनेपन की समस्या, मृदा के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए उपाय व खेती में आर्टिफिशियल इंटैलिजैंस के उपयोग पर भी इस कार्यशाला में विचार करने के लिए कहा।

कृषि विभाग के अतिरिक्त निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आर.एस. सोलंकी ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा द्वारा किसानों के हित में चलाई जा रही योजनाओं व उपलब्धियों के बारे में बताया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	15.10.22	9	3-6

संतुलित पोषक तत्व, फसल अवशेष प्रबंधन व प्राकृतिक खेती समय की मांग : प्रो. काम्बोज

एचएयू वैज्ञानिकों एवं प्रदेश के कृषि अधिकारियों की वर्कशॉप, फसलों में नई समग्र सिफारिशों के लिए दो दिन करेंगे मंथन

पुस्तिका का विमोचन करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अन्य।

हिसार, 14 अक्तूबर (विरेंद्र वर्मा) : कृषि क्षेत्र के विकास के लिए नई सोच और सहयोग से आगे बढ़ना जरूरी। संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन के साथ-साथ तत्वों के पौधे द्वारा ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाने की तकनीक अपनाना, ड्रेनेज सिस्टम अपनाने व मृदा के लवणता प्रबंधन पर भी ध्यान देना होगा। ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का शुभारंभ में बतौर मुख्यातिथि कहे। उन्होंने कहा लेजर लेवलिंग करवाते समय खेतों में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले ढलान जोकि अधिक वर्षा के पानी को निकालने में सहायक होते हैं उनका भी ध्यान रखने की जरूरत। अधिक वर्षा के समय पानी को संचित करने व बाद में खेती के लिए उपयोग करना समय की मांग है। उन्होंने किसानों और वैज्ञानिकों को अधिक उत्पादन के लिए बधाई दी लेकिन इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन, फसल अवशेषों का प्रबंधन, प्राकृतिक खेती व मृदा स्वास्थ्य पर ध्यान देने के लिए युवाओं को कृषि संबंधित प्रशिक्षण देने पर बल दिया। कार्यक्रम में हरियाणा सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा बतौर विशिष्ट अतिथि ऑनलाइन माध्यम से वर्कशॉप में जुड़ी। इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों तथा प्रदेश के सभी जिलों से राज्य कृषि और किसान कल्याण विभाग के कृषि अधिकारियों ने भाग लिया।

जलवायु परिवर्तन व मृदा में घटते हुए जैविक कार्बन आज की मुख्य चुनौतियां : डॉ. सुमिता मिश्रा

हरियाणा सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा, आईएएस ने वर्कशॉप के दौरान कहा कि वर्तमान समय में जलवायु में हो रहे परिवर्तन व मृदा में घटते हुए जैविक कार्बन का स्तर मुख्य चुनौतियां है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि हमें बदलती जलवायु के अनुकूल फसलों की नई किस्में विकसित करनी होंगी व मृदा स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए टिकाऊ खेती की तरफ बढ़ना होगा। इसके अलावा उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती को इस रबी सीजन से किसानों के साथ मिलकर शुरू करने की पहल की जा रही है। इस अवसर पर कृषि मेले के संस्मरण पर आधारित कीर्तिमानों के नए स्तर नामक पुस्तिका का भी विमोचन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ-छोर	14.10.2022	-----	----

संतुलित पोषक तत्व, फसल अवशेष प्रबंधन व प्राकृतिक खेती समय की मांगः प्रो. काम्बोज

नभ-छोर न्यूज ▶▶ 14 अक्टूबर

हिसार। कृषि क्षेत्र के विकास के लिए नई सोच और सहयोग से आगे बढ़ना जरूरी। संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन के साथ-साथ तत्वों के पौधे द्वारा ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाने की तकनीक अपनाना, ट्रेनेज सिस्टम अपनाने व मृदा के लवणता प्रबंधन पर भी ध्यान देना होगा। ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का शुभारंभ में बतौर मुख्यातिथि कहे। उन्होंने कहा लैजर लेवलिंग करवाते समय खेतों में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले ढलान जोकि अधिक वर्षा के पानी को निकालने में सहायक होते हैं उनका भी ध्यान रखने की जरूरत। अधिक वर्षा के समय पानी को संचित करने व बाद में खेती के लिए उपयोग करना समय की मांग है। उन्होंने किसानों और वैज्ञानिकों को अधिक उत्पादन के लिए बधाई दी लेकिन इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन, फसल अवशेषों का प्रबंधन, प्राकृतिक खेती व मृदा स्वास्थ्य पर ध्यान देने के लिए युवाओं को कृषि संबंधित प्रशिक्षण वैज्ञानिक व कृषि अधिकारी किसानों को परम्परागत खेती की बजाय फसल विविधिकरण के साथ-साथ आधुनिक खेती के तौर तरीकों, मृदा जांच व नवीनतम तकनीकों की जानकारी देते हुए जागरूक करें। कार्यक्रम में राज्य सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा बतौर विशिष्ट अतिथि ऑनलाइन माध्यम से वर्कशॉप में जुड़ी। इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों तथा प्रदेश के सभी जिलों से राज्य कृषि और किसान कल्याण विभाग के कृषि अधिकारियों ने भाग लिया। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा ने वर्कशॉप के दौरान कहा कि वर्तमान समय में जलवायु में हो रहे परिवर्तन व मृदा में घटते हुए जैविक कार्बन का स्तर मुख्य चुनौतियां है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि हमें बदलती जलवायु के अनुकूल फसलों की नई किस्में विकसित करनी होंगी व मृदा स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए टिकाऊ खेती की तरफ बढ़ना होगा। प्राकृतिक खेती को इस रबी सीजन से किसानों के साथ मिलकर शुरू करने की पहल की जा रही है। उन्होंने कहा कि मृदा परीक्षण की रिपोर्ट के आधार पर संतुलित उर्वरक प्रबंधन व नैनो यूरिया जैसे नए उर्वरकों को अपनाकर मृदा स्वास्थ्य को सुधारने के साथ-साथ अधिक पैदावार लेने संबंधी तकनीकी जानकारी अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचानी होगी। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित फसलोत्पादन संबंधी सिफारिशें बहुत ही कारगर हैं, उनको अपनाने के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रेरित करें। कृषि महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने वर्तमान समय में कृषि विभाग के समक्ष आ रही चुनौतियों के बारे में चर्चा करते हुए बताया कि पिछले कुछ वर्षों से मार्च के महीने में औसत तापमान में हो रही वृद्धि से गेंहू की फसल पर विपरित असर पड़ने से उत्पादकता कम हो रही है। उन्होंने बताया कि गेंहू की कुछ ऐसी किस्में विकसित की जाए जो तापमान में हो रही वृद्धि के प्रति सहनशील हो। इसके अलावा उन्होंने खेती में आ रही समस्याओं मृदा के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए उपाय व खेती में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग पर भी इस कार्यशाला में विचार करने के लिए कहा। कृषि विभाग के अतिरिक्त निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आरएस सोलंकी ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा किसानों के हित में चलाई जा रही योजनाओं व उपलब्धियों के बारे में बताया। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने वर्कशॉप की जानकारी देते हुए निदेशालय द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों जबकि अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने विश्वविद्यालय में चल रही अनुसंधान परियोजनाओं के बारे में बताया। कार्यशाला के नोडल ऑफिसर डॉ. हवा सिंह सहारण ने मंच का संचालन किया। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया। इस अवसर पर कृषि मेले के संस्मरण पर आधारित कीर्तिमानों के नए स्तर नामक पुस्तिका का भी विमोचन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	14.10.2022	-----	----

संतुलित पोषक तत्व, फसल अवशेष प्रबंधन व प्राकृतिक खेती समय की मांग : प्रो. काम्बोज

एचएयू वैज्ञानिकों एवं प्रदेश के कृषि अधिकारियों की वर्कशॉप, फसलों में नई समग्र सिफारिशों के लिए दो दिन करेंगे मंथन

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। कृषि क्षेत्र के विकास के लिए नई सोच और सहयोग से आगे बढ़ना जरूरी। संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन के साथ-साथ तत्वों के पौधे द्वारा ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाने की तकनीक अपनाना, ड्रेनेज सिस्टम अपनाने व मृदा के लवणता प्रबंधन पर भी ध्यान देना होगा। ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का शुभारंभ में बतौर मुख्यातिथि कहे।

उन्होंने कहा लेजर लेवलिंग करवाते समय खेतों में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले ढलान जोकि अधिक वर्षा के पानी को निकालने में सहायक होते हैं उनका भी ध्यान रखने की जरूरत। अधिक वर्षा के समय पानी को संचित करने व बाद में खेती के लिए उपयोग करना समय की मांग है। उन्होंने किसानों और वैज्ञानिकों को अधिक उत्पादन के लिए बधाई दी लेकिन इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन, फसल अवशेषों का प्रबंधन, प्राकृतिक खेती व मृदा स्वास्थ्य पर ध्यान देने के लिए युवाओं को कृषि संबंधित प्रशिक्षण देने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक व कृषि अधिकारी किसानों को परम्परागत खेती की बजाय फसल विविधिकरण के साथ-साथ आधुनिक खेती के तौर तरीकों, मृदा जांच व नवीनतम तकनीकों की जानकारी देते हुए जागरूक करें।

कार्यक्रम में हरियाणा सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा बतौर विशिष्ट अतिथि ऑनलाइन माध्यम से वर्कशॉप में जुड़ी। इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों तथा प्रदेश के सभी जिलों से राज्य कृषि और किसान कल्याण विभाग के कृषि अधिकारियों ने भाग लिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	14.10.2022	-----	----

संतुलित पोषक तत्व व प्राकृतिक खेती समय की मांग : प्रो. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। कृषि क्षेत्र के विकास के लिए नई सोच और सहयोग से आगे बढ़ना जरूरी। संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन के साथ-साथ तत्वों के पौधे द्वारा ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाने को तकनीक अपनाना, ट्रेंच सिस्टम अपनाने व मृदा के लवणता प्रबंधन पर भी ध्यान देना होगा। ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का शुभारंभ में बतौर मुख्यातिथि कहे। उन्होंने कहा लेजर लेवलिंग करवाते समय खेतों में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले छलान जोकि अधिक वर्षा के पानी को निकालने में सहायक होते हैं उनका भी ध्यान रखने की जरूरत। अधिक वर्षा के समय पानी को संचित करने व बाद में खेती के लिए उपयोग करना समय की मांग है। उन्होंने किसानों और वैज्ञानिकों को अधिक उत्पादन के लिए बधाई दी लेकिन इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन, फसल अवशेषों का प्रबंधन, प्राकृतिक खेती व मृदा स्वास्थ्य पर ध्यान देने के लिए युवाओं को कृषि संबंधित प्रशिक्षण देने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक व कृषि अधिकारी किसानों को परम्परागत खेती की बजाय फसल विविधिकरण के साथ-साथ आधुनिक खेती के तौर तरीकों, मृदा जांच व नवीनतम तकनीकों की जानकारी देते हुए जागरूक करें। कार्यक्रम में

हरियाणा सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा बतौर विशिष्ट अतिथि ऑनलाइन माध्यम से वर्कशॉप में जुड़ी। इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों तथा प्रदेश के सभी जिलों से राज्य कृषि और किसान कल्याण विभाग के कृषि अधिकारियों ने भाग लिया।

जलवायु परिवर्तन व मृदा में घटते हुए जैविक कार्बन आज की मुख्य चुनौतियां : डॉ. सुमिता मिश्रा

हरियाणा सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा, आईएएस ने वर्कशॉप के दौरान कहा कि वर्तमान समय में जलवायु में हो रहे परिवर्तन व मृदा में घटते हुए जैविक कार्बन का स्तर मुख्य चुनौतियां है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि हमें बदलती जलवायु के अनुकूल फसलों की नई किस्में विकसित करनी होंगी व मृदा स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए टिकाऊ खेती की तरफ बढ़ना होगा। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित फसलोत्पादन संबंधी सिफारिशें बहुत ही कारगर हैं, उनको अपनाने के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रेरित करें। कृषि महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने वर्तमान समय में कृषि विभाग के समक्ष आ रही चुनौतियों के बारे में चर्चा करते हुए बताया कि पिछले कुछ वर्षों से मार्च के महीने में औसत तापमान में हो रही वृद्धि से गेंहू की फसल पर विपरित असर पड़ने से उत्पादकता कम हो रही है। उन्होंने बताया कि गेंहू की कुछ ऐसी किस्में विकसित की जाए जो तापमान में हो रही वृद्धि के प्रति सहनशील हो। इसके अलावा उन्होंने खेती में आ रही समस्याओं जैसे धान में बौनेपन की समस्या, मृदा के स्वास्थ्य को बचाए रखने के लिए उपाय व खेती में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग पर भी इस कार्यशाला में विचार करने के लिए कहा। कृषि विभाग के अतिरिक्त निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आर.एस. सोलंकी ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा द्वारा किसानों के हित में चलाई जा रही योजनाओं व उपलब्धियों के बारे में बताया। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने वर्कशॉप की विस्तृत जानकारी देते हुए निदेशालय द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों जबकि अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने विश्वविद्यालय में चल रही अनुसंधान परियोजनाओं के बारे में बताया। कार्यशाला के नोडल ऑफिसर डॉ. हवा सिंह सहारण ने मंच का संचालन किया। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया। इस अवसर पर कृषि मेले के संस्मरण पर आधारित कीर्तिमानों के नए स्तर चामक पुस्तिका का भी विमोचन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	14.10.2022	-----	----

संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन, फसल अवशेष प्रबंधन व प्राकृतिक खेती समय की मांग : प्रो. बी.आर. काम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। कृषि क्षेत्र के विकास के लिए नई सोच और सहयोग से आगे बढ़ना जरूरी। संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन के साथ-साथ तत्वों के पौधे द्वारा ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाने की तकनीक अपनाना, ड्रेनेज सिस्टम अपनाने व मृदा के लवणता प्रबंधन पर भी ध्यान देना होगा। ये विचार कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कृषि अधिकारी कार्यशाला का शुभारंभ में बतौर मुख्यातिथि कहे। उन्होंने किसानों और वैज्ञानिकों को अधिक उत्पादन के लिए बधाई दी लेकिन इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन, फसल अवशेषों का प्रबंधन, प्राकृतिक खेती व मृदा स्वास्थ्य पर ध्यान देने के लिए युवाओं को कृषि संबंधित प्रशिक्षण देने पर बल दिया।

पुस्तिका का विमोचन करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अन्य

उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक व कृषि अधिकारी किसानों को परम्परागत खेती की बजाय फसल विविधिकरण के साथ-साथ आधुनिक खेती के तौर तरीकों, मृदा जांच व नवीनतम तकनीकों की जानकारी देते हुए जागरूक करें। इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों तथा प्रदेश के सभी जिलों से राज्य कृषि और किसान कल्याण विभाग के कृषि अधिकारियों ने भाग लिया। हरियाणा सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा ने कहा कि वर्तमान समय में जलवायु में हो रहे परिवर्तन व मृदा में घटते हुए जैविक कार्बन का स्तर मुख्य चुनौतियां है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि हमें बदलती जलवायु के अनुकूल फसलों की नई किस्में विकसित करनी होंगी व मृदा स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए टिकाऊ खेती की तरफ बढ़ना होगा इसके अलावा उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती को इस रबी सीजन से किसानों के साथ मिलकर शुरू करने की पहल की जा रही है।

कृषि महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने वर्तमान समय में कृषि विभाग के समक्ष आ रही चुनौतियों के बारे में चर्चा करते हुए बताया कि पिछले कुछ वर्षों से मार्च के महीने में औसत तापमान में हो रही वृद्धि से गेहूं की फसल पर विपरित असर पड़ने से उत्पादकता कम हो रही है। उन्होंने बताया कि गेहूं की कुछ ऐसी किस्में विकसित की जाए जो तापमान में हो रही वृद्धि के प्रति सहनशील हो। इस अवसर पर कृषि मेले के संस्मरण पर आधारित कीर्तिमानों के नए सत नामक पुस्तिका का भी विमोचन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	15.10.2022	02	3-6

हकृवि वैज्ञानिकों एवं प्रदेश के कृषि अधिकारियों की वर्कशॉप

● फसलों में नई समग्र सिफारिशों के लिए दो दिन करेंगे मंथन

सवेरा न्यूज/सुरेंद्र सोढी

हिसार, 14 अक्तूबर : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिकों व प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में हरियाणा सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डा. सुमिता मिश्रा बतौर विशिष्ट अतिथि ऑनलाइन माध्यम से वर्कशॉप में जुड़ी। इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों तथा प्रदेश के सभी जिलों से राज्य कृषि और किसान कल्याण विभाग के कृषि अधिकारियों ने भाग लिया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का शुभारंभ किया। । संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन के साथ-साथ तत्वों के पौधे द्वारा ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाने की तकनीक अपनाना, ड्रेनेज सिस्टम अपनाने व मृदा के लवणता प्रबंधन पर भी ध्यान देना होगा। अधिक वर्षा के समय पानी को संचित करने व बाद में खेती के लिए उपयोग करना समय की मांग है। कार्यशाला के नोडल ऑफिसर डा. हवा सिंह सहारण ने मंच का संचालन किया। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एस.के. पाहुजा ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया। इस अवसर पर कृषि मेले के संस्मरण पर आधारित कीर्तिमानों के नए स्तर नामक पुस्तिका का भी विमोचन किया गया।

पुस्तिका का विमोचन करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अन्य।

विपरीत प्रभाव से गेहूं की फसल प्रभावित : कृषि महानिदेशक

कृषि महानिदेशक डा. हरदीप सिंह ने वर्तमान समय में कृषि विभाग के समक्ष आ रही चुनौतियों के बारे में चर्चा करते हुए बताया कि पिछले कुछ वर्षों से मार्च के महीने में औसत तापमान में हो रही वृद्धि से गेहूं की फसल पर विपरित असर पड़ने से उत्पादकता कम हो रही है। उन्होंने बताया कि गेहूं की कुछ ऐसी किस्में विकसित की जाए जो तापमान में हो रही वृद्धि के प्रति सहनशील हो।

जलवायु परिवर्तन व मृदा में घटते हुए जैविक कार्बन बनी चुनौती : डा. मिश्रा

हरियाणा सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डा. सुमिता मिश्रा, आईएएस ने वर्कशॉप के दौरान कहा कि वर्तमान समय में जलवायु में हो रहे परिवर्तन व मृदा में घटते हुए जैविक कार्बन का स्तर मुख्य चुनौतियां है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि हमें बदलती जलवायु के अनुकूल फसलों की नई किस्में विकसित करनी होंगी व मृदा स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए टिकाऊ खेती की तरफ बढ़ना होगा।